वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत
(Marginal Productivity Theory of productivity)

वितरण का अर्थ

अर्थशास्त्र में उत्पादन के विभिन्न साधनों की संयुक्त प्रयत्न द्वारा उत्पादित धन को उनके ही मध्य बांटने की आर्थिक क्रिया को वितरण कहा जाता है।

प्रोफेसर चैपमैन

"वितरण के अर्थशास्त्र में इस बात का वितरण होता है कि एक समुदाय द्वारा उत्पादित धन को उन साधनों या उनके स्वामियों में किस प्रकार हिस्से किये जाते हैं जो उनके उत्पादन में क्रियाशील रहे हैं"

आधुनिक काल में उत्पादन भूमि, श्रम, पूंजी, प्रबंध और साहसी सभी के सहयोग से होता है।

इन साधनों की पूर्ति करने वाले को साधक कहा जाता है जो क्रमशः भूमिपति, श्रमिक, पूँजीपति, संगठनकर्ता और उद्यमी अथवा साहसी है। इन पांच साधकों को उत्पादन के जो हिस्से को मिलते हैं उनके अलग अलग नाम दिए गए हैं।

जैसे:

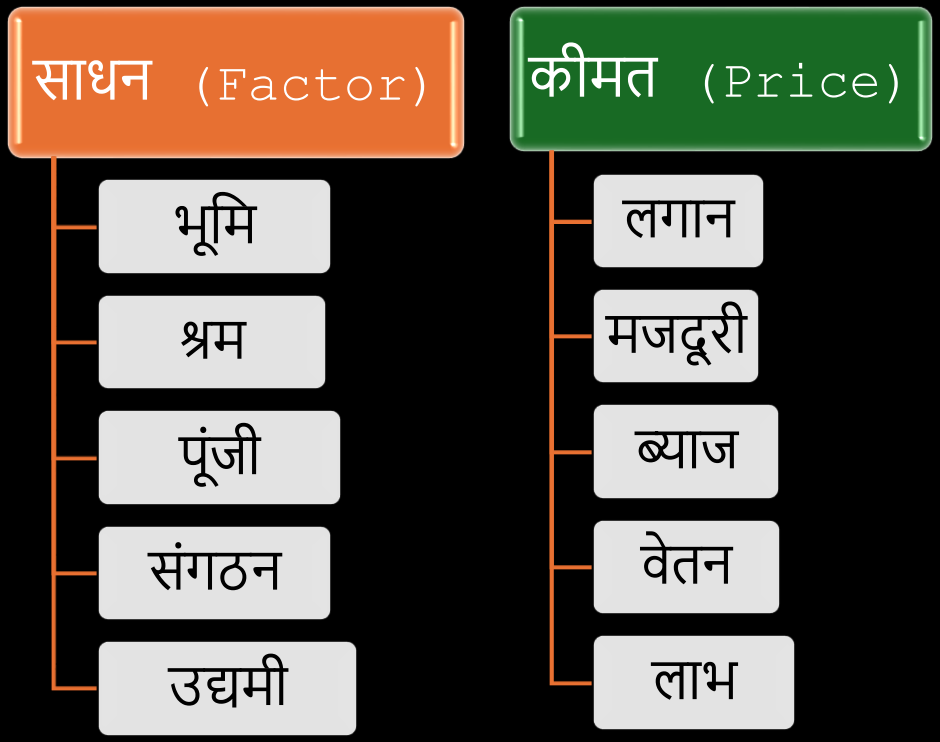

साधन कीमत निर्धारण के लिए एक प्रत्यक्ष सिद्धांत की आवश्यकता

साधन कीमत सिद्धांत का संबंध उत्पादन के साधनों की कीमत के निर्धारण से, जबकि मूल्य सिद्धांत का संबंध उत्पादित वस्तुओं की कीमत निर्धारण से है इन दोनों सिद्धांतों की यह मान्यता है कि कीमत के निर्धारण मांग तथा आपूर्ति द्वारा होता है। किंतु वस्तु कीमत निर्धारण और साधन कीमत निर्धारण में कुछ महत्वपूर्ण अंतर है जिसके कारण कीमत निर्धारण के लिए एक पृथक सिद्धांत की आवश्यकता पड़ती है।

साधन कीमत निर्धारण के सिद्धांत

- सीमांत उत्पादकता सिद्धांत
- आधुनिक सिद्धांत

उत्पादन वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत

सीमांत उत्पादकता का सिद्धांत इस बात की सामान्य व्याख्या करता है कि उत्पत्ति के साधनों के पुरस्कार अर्थात उनकी कीमत किस प्रकार निर्धारित होती है?

इस सिद्धांत का प्रतिपादन 19वीं शताब्दी के अंत में जेबी क्लार्क, बालरस इत्यादि अर्थशास्त्रियों ने किया। तत्पश्चात श्रीमती जॉन राबिन्सन और हिक्स इत्यादि अर्थशास्त्रियों के हाथों इसका विकास हुआ

सीमांत उत्पादकता का सिद्धांत बताता है कि एक साधन की कीमत उसकी उत्पादकता पर निर्भर करती है तथा वह सीमांत उत्पादकता द्वारा निर्धारित होती है

सीमांत उत्पादकता का अर्थ

सीमांत भौतिक उत्पादकता
Marginal Physical productivity

जब हम सीमांत उत्पादकता को उत्पादन या वस्तुओं की मात्रा में होने वाली वृद्धि के रूप में व्यक्त करते हैं तो उसे सीमांत भौतिक उत्पादकता कहा जाता है

अन्य बातें सामान्य रहने पर यदि *किसी एक साधन की अतिरिक्त इकाई का प्रयोग करने से कुल उत्पादन में जो वृद्धि होगी उसे सीमांत भौतिक उत्पादकता कहा जाता है*

उदाहरण, यदि एक श्रमिक लगाने से कपड़े का उत्पादन 5 मीटर होता है तथा दूसरा श्रमिक लगाने से कुल उत्पादन बढ़कर 9 मीटर हो जाता है तो दूसरे की सीमांत भौतिक उत्पादकता होगी?

सीमांत आगम उत्पादकता
Marginal Revenue productivity

जब सीमांत इकाई उत्पादकता को मौद्रिक इकाई में मापा जाए तो उसे सीमांत आगम उत्पादकता कहते हैं

अतः सीमांत भौतिक उत्पादकता (MPP) को सीमांत आगम (MR) से गुणा करने पर सीमांत उत्पादकता प्राप्त होती है

$$MRP = MPP \times MR$$

उदाहरण, **यदि एक श्रमिक की सीमांत भौतिक उत्पादकता 40 इकाई है तथा उसका सीमांत आगम रुपीज आठ है तब उससे श्रमिक की सीमा का उत्पादकता होगी**

सीमांत उत्पादकता का मूल्य
Value of Marginal Productivity

एक साधन की सीमांत भौतिक उत्पादकता को उस संसाधन द्वारा उत्पादित वस्तुओं की कीमत से गुणा करने से जो आय बढ़ती है, उसे सीमांत उत्पादकता के मूल्य कहा जाता है

उदाहरण, यदि कपड़े की कीमत ₹5 प्रति मीटर है और सीमांत भौतिक उत्पादन 12 इकाइयाँ है तो सीमांत उत्पादकता का मूल्य होगा?

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत के अनुसार उत्पादन साधनों की कीमत सिद्धांत उत्पादकता के अनुसार निर्धारित होते हैं, **अतः हमारे समक्ष निम्नलिखित दो प्रश्न उत्पन्न होते हैं:**

उत्पादन साधनों की कीमत का आधार उनकी उत्पादकता ही क्यों होती है अन्य कोई आधार क्यों नहीं होता?

साधनों की मांग वस्तुओं की मांग पर निर्भर करती है जिसके उत्पादन में यह सहयोग देती है यू कहे साधनों की मांग उनकी उत्पादकता पर निर्भर होती है।

जिन साधनों की उत्पादकता अधिक होगी उसकी अधिक मांग के कारण कीमत भी अधिक होती है।

अगर हम ये मान ले की उत्पादकता ही आधार रहे तो यह आधार सीमांत उत्पादकता ही क्यों होता है, औसत उत्पादकता तक क्यों नहीं?

साधन कीमत निर्धारण में सीमा उत्पादकता आधार होती है न कि औसत उत्पादकता इसका कारण यह है कि जिस प्रकार एक फर्म अपनी सीमांत आगम और सीमांत लागत को बराबर कर के लाभ अधिकतम करती है। उसी प्रकार एक फर्म अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिये साधन की सीमांत उत्पादकता और साधन की सीमांत लागत को बराबर करती है।

- इस सिद्धांत के अनुसार, उत्पादन साधनों की कीमत उनकी सीमांत उत्पादकता के अनुसार चुकाई जाती है।
- यदि किसी साधन की कीमत उसकी सीमा उत्पादकता से कम होती है तो फर्म को लाभ होने के कारण वह उस साधन की अतिरिक्त इकाइयों काम मिलता है अर्थात अधिक इकाइयों की मांग करता है
- इसके विपरीत यदि साधन की कीमत उसकी सीमांत उत्पादकता से अधिक होती है तो फर्म में हानि होने के कारण उस साधन की इकाइयों को कम करती है तथा ऐसा तब तक करती है जब तक सीमांत उत्पादकता इसकी कीमत के बराबर नहीं हो जाती है

सीमांत उत्पादकता सिद्धांत की मान्यतायें

- **समरूप इकाइयां** - विभिन्न साधनों की सभी इकाइयों गौण ब कार्यकुशलता की दृष्टि से समान है
- **साधनों का प्रतिस्थापन** - उत्पादन कार्य ऐसा है जिसमें उत्पादन के विभिन्न साधनों को एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त करके उनकी मात्रा को घटाना संभव है
- बाजार में साधनों में **पूर्ण प्रतियोगिता** की स्थिति रहती है
- उत्पत्ति की विभिन्न **साधनों की पूर्ण गतिशीलता** पाई जाती है
- यह सिद्धांत **ह्रासमान प्रतिफल नियम पर आधारित** है अर्थात यह सिद्धांत उसी विशेष उद्योग में लागू होता है जिसमें ह्रासमान प्रतिफल नियम क्रियाशील होता है
- यह सिद्धांत दीर्घकाल में **उत्पादन के साधनों का पारिश्रमिक निर्धारित** करता है

पूर्ण प्रतियोगिता में साधन कीमत निर्धारण

इस अवस्था में साधन की कीमत उद्योग द्वारा निर्धारित की जाएगी उद्योग द्वारा निर्धारित साधन कीमत पर फर्म यह तय करेगी कि किस साधन की किस संख्या को काम पर लगाया जाए। साधन की उस संख्या को काम पर लगाया जाएगा जिसपर उस साधन की कीमत उसकी सीमांत उत्पादकता के बराबर हो जाती है अतः **एक उद्योग** की दृष्टि से यह सिद्धांत **साधन कीमत सिद्धांत** है परंतु **एक फर्म** की दृष्टि से यह सिद्धांत **रोजगार का सिद्धांत तथा साधन मांग का सिद्धांत** है।

सीमांत उत्पादन का सिद्धांत का अध्ययन दो दृष्टिकोण से किया जाता है:-

- एक उद्योग की दृष्टि से
- एक फर्म की दृष्टि से

एक उद्योग की दृष्टि से सीमांत उत्पादकता सिद्धांत का विश्लेषण

पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में साधन की कीमत उद्योग द्वारा निर्धारित होती है। साधन की संतुलित कीमत स्तर पर निर्धारित होती हैं जिन पर उसकी मांग और पूर्ति बराबर है सीमांत उत्पादकता सिद्धांत पूर्ण रोजगार की मान्यता पर आधारित है फलता यहाँ पर साधन की पूर्ति को स्थिर माना गया है। इसलिए साधन कीमत मांग द्वारा ही निर्धारित होगी, अतः हम जानते हैं कि किसी साधन की मांग उसकी सीमा को उत्पादकता द्वारा निर्धारित की जाती है इसलिए साधन की कीमत सिद्धांत उत्पादकता के बराबर होती है।

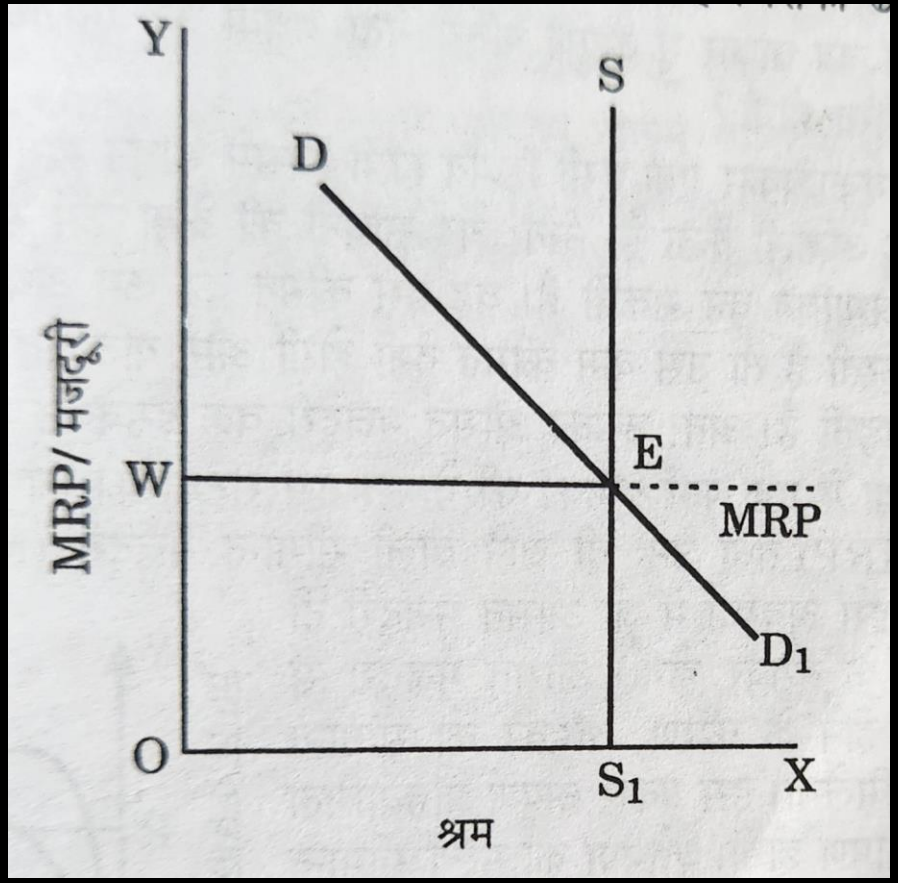

फर्म द्वारा साधन की मात्रा का निर्धारण अथवा साधन बाजार में फर्म का संतुलन

एक फर्म किसी साधन की उतनी ही इकाइयों का प्रयोग करती हैं जहाँ साधन की सीमांत लागत और सीमान्त उत्पादकता के बराबर होंगे फर्म का ही संतुलन होगा और न ही उसे अधिकतम लाभ मिलेगा।

क्योंकि पूर्ण प्रतियोगिता में साधन की कीमत उद्योग द्वारा निर्धारित होती है इसलिए फर्म को केवल यह तय करना पड़ता है कि उस दिन हुए साधन की कीमत पर कितने श्रमिकों को कार्य पर लगाए इस सिद्धांत के अनुसार फल अपूर्ण प्रतियोगिता की अवस्था में किसी भी साधन की इस मात्रा को कम पर लगाएगी जिसपर उस साधन की कीमत तथा सीमांत आय उत्पादकता बराबर हो जाए

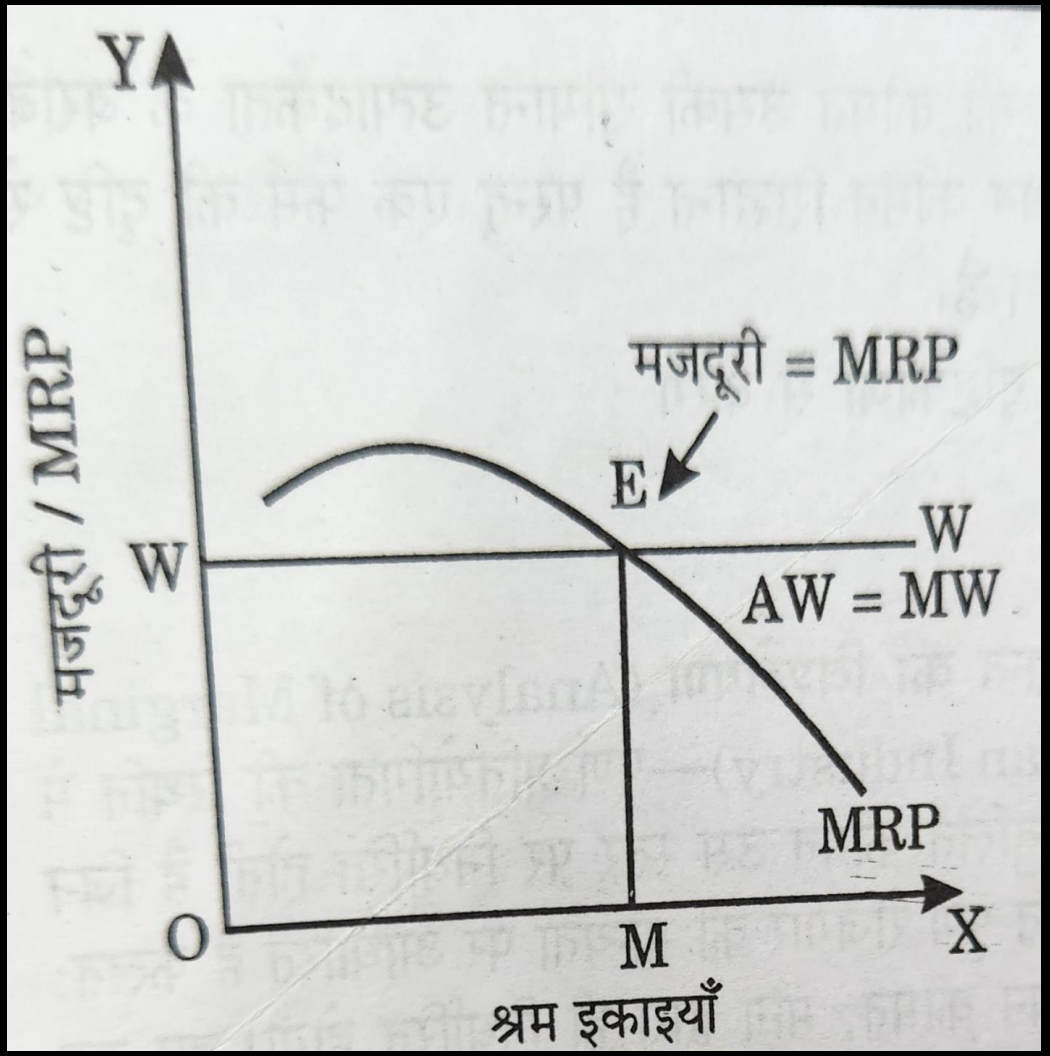

अपूर्ण प्रतियोगिता में साधन कीमत निर्धारण

साधन बाजार में क्रय एकाधिकार एक ऐसी स्थिति होगी जिसमें साधन खरीदने वाली फर्म का साधन बाजार में एकाधिकार है अर्थात वह अकेली क्रेता है तथा साधनों की क्रेता फर्म साधारण बाजार में अपनी क्रियाओंद्वारा साधन की कीमत को प्रभावित कर सकती है। वह इस कीमत को कम या अधिक कर सकती है। यदि वह श्रमिकों को कम मांग करती है तो उसे कम कीमत देनी होगी और यदि वह श्रमिकों की अधिक मांग करती है तो उसे मजदूरी बढ़ानी पड़ती है अतः उसका औसत मजदूरी वक्रउसके ऊपर स्थित होता है

क्रेताधिकार की अवस्था में एक फर्म श्रमिकों की केवल उस संख्या को काम पर लगाएगी जिस पर श्रमिकों की सीमांत उत्पादकता तथा उन्हें दी जाने वाली सीमांत मजदूरी बराबर हो जाती है यह संतुलन की व्यवस्था होगी इस अवस्था में जो औसत मजदूरी दी जाएगी वो साधन कीमत के बराबर होगी औसत मजदूरी से सीमांत उत्पादकता अधिक होने के कारण श्रमिकों को सीमांत उत्पादकता से कम मजदूरी मिलेंगी इसी प्रकार अपूर्ण प्रतियोगिता की व्यवस्था में श्रमिकों का शोषण होता है शोषण का मूल्य सीमांत मजदूरी तथा सीमांत उत् पादकता तथा औसत मजदूरी यह साधन कीमत के अंतर पर निर्भर करेगा

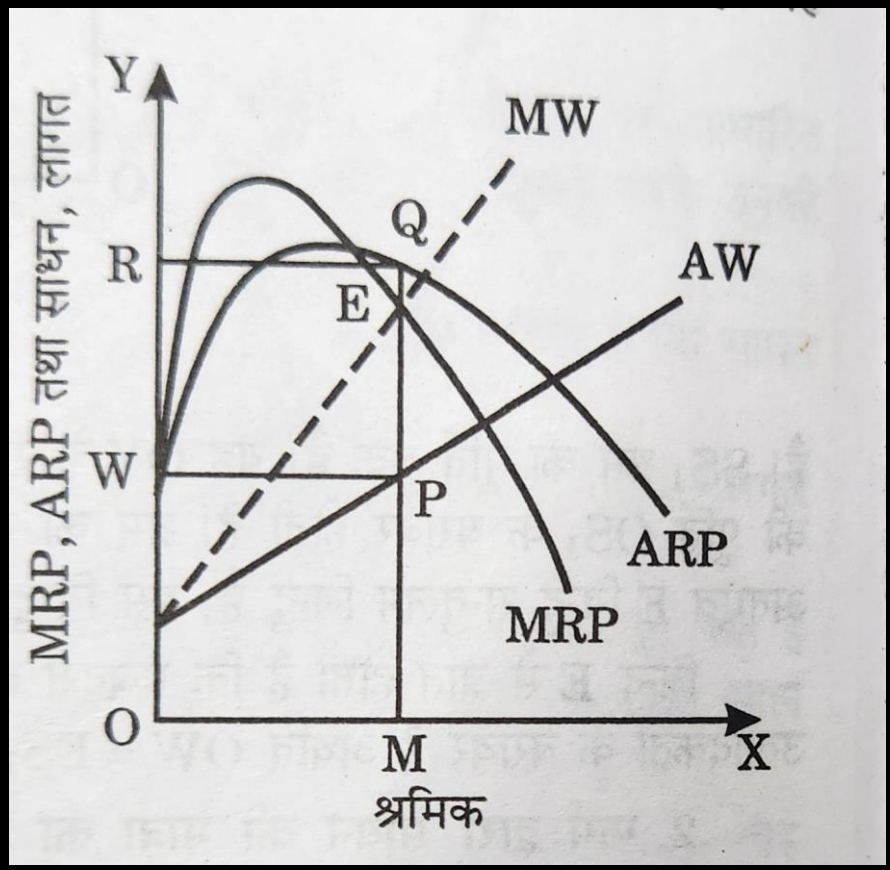

सिद्धांत की आलोचनायें

अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित जैसे पूर्ण प्रतियोगिता, अपूर्ण गतिशीलता, पूर्ण रोजगार आदि वास्तविक स्थिति है

अविभाज्य साधन यह सिद्धांत इस मान्यता पर कार्यरत ई एक ही साधनों को छोटे छोटे भागों में विभाजित कर सकते हैं परन्तु वास्तव में साधनों को छोटे छोटे भागों में नहीं बांटा जा सकता है

एकरूपता का अभाव यह सिद्धत इस मान्यता पर आधारित है कि उत्पादन के साधनों की विभिन्न इकाइयों में एकरूपता होती है लेकिन वास्तविक जगत में साधनों की इकाई या समरूप नहीं होती है

उत्पादन के साधनों की गतिशीलता ये सिद्धांत इस मान्यता पर आधारित है कि उत्पादन के साधनों में पूर्ण गतिशीलता पाई जाती है परंतु व्यावहारिक जगह जीवन में कोई भी साधन पूर्ण गतिशील नहीं होता

सीमांत उत्पादकता को ज्ञात करना कठिन है

किसी वस्तु का उत्पादन किसी एक उत्पादन के साधनों द्वारा नहीं बल्कि सभी साधनों के संयुक्त प्रयास द्वारा होते हैं अतः संयुक्त उत्पादन में से किसी साधन विशेष की सीमा उत्पादकता को मालूम कर पाना कठिन है

अपूर्ण एवं एकपक्षीय सिद्धांत यह सिद्धांत केवल मांग पक्ष पर ही विशेष ज़ोर देता है पूर्ति पक्ष पर नहीं अतः यहाँ आ वास्तविक है

लाभ अधिकतम करने की मान्यता ठीक नहीं यह सिद्धांत की मान्यता है कि फर्मो का व्यवहार विवेकशील होता है और उनका उद्देश्य अपने लाभ को अधिकतम करना होता है परन्तु वास्तव में फार्म को अपने उत्पादन नीती को निश्चित करते समय लाभ उद्देश्य के साथ साथ अन्य भी विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखना पड़ता है

यह सिद्धांत **समाज में धन के वितरण की असमानता** का समर्थन करता है